॥ श्री ॥

श्री पुंधर्म भजनाऽमृतम्

[अष्टम् प्रमोदः]



पुरुषधर्माऽऽचार्य महर्षि रघुनन्दनदास विरचितः

॥ श्री ॥

श्री पुंधर्म भजनाऽमृतम्

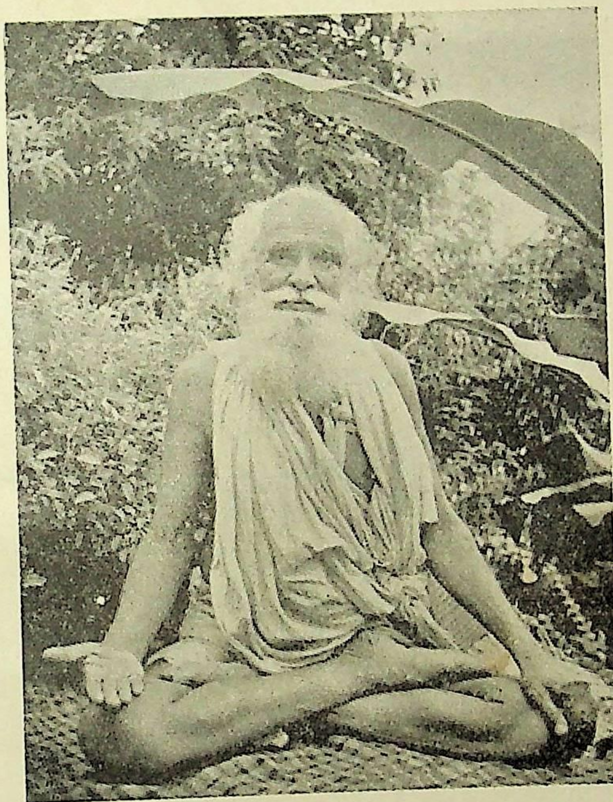
[अष्टम् प्रमोदः]

पुरुषधर्माऽऽचार्य महर्षि रघुनन्दनदास विरचितः

प्रथम संस्करण

1959

प्रकाशक—स्वामी रघुनन्दन दास, राजौरी।
मुद्रक—अमर आर्ट प्रेस मोती बाज़ार जम्मू।



पुरुषधर्माऽऽचार्य श्री रघुनन्दन दास जी

[पुं धर्म भजनाऽमृतम्]

श्री रामाय मे नमः

नित्यं सदा नवं दिव्यं परमं पुरुषं विभुम्।
त्यक्त्वा मृतान्भजन्ति ये, नाशं ते यान्ति सर्वतः ॥

पु० अ० ३८ । कि० ८

निवेदन

श्री पुं धर्म भजनाऽमृत का यह आठवां प्रमोद है। यह सरल शुद्ध पवित्र भाषा देव नागरी में रचा गया है। यह परम पुरुष पर ब्रह्म सदा नव नित्य अविनाशी पुं धर्म का सद्भाव भक्ति प्रेमाऽऽनन्द से भरा हुआ है। इसके पढ़ने से उस पर ब्रह्म अविनाशी सर्वव्यापी सदा स्थिर रहने वाले प्रभु के पास ही पहुँच जाता है। और उस विभु के साथ सच्चा संग सम्बन्ध योग भी हो जाता है। यही ईश्वर का सच्चा भजन चिन्तन है इसी से सर्व जन्म जन्मान्तरों के पाप दुःख दोषादि नाश हो जाते हैं, और सर्व प्रकार के पाखण्ड पाप बन्धन भी टूट जाते हैं। यही सर्व पाप दुःखों का नाश करने वाला पवित्र सच्चा

तीर्थ है। घर में ही इस को पढ़ २ कर शुद्ध हो जाना चाहिये। ईश्वर भजन से परे और कोई विशेष तीर्थ नहीं हो सकता है। अतः स्त्री पुरुष बाल वृद्धादि सब को इस का पाठ सेवन करके पर ब्रह्म परमात्मा का नित्य चिन्तन कर लेना चाहिये, और आप सब पाठकों को देश भक्ति धर्म सेवा संगठन आदि धर्म नीति के सद्विचार भी प्राप्त हो जावें गे। इस पुस्तक के सात प्रमोद और भी हैं, जो परमात्मा के प्रेमानन्दादि सुधा रस में भरे हुये अनेक राग रागनियों से सिद्ध किये गये हैं। इन भजनों के गाने से भक्त के मन में प्रेम रूपी गङ्गा बहने लगती है। अतः पर ब्रह्म का चिन्तन भजन करके पुरुषजन्म का लाभ उठाना चाहिये। ऐसा मानव जन्म बार २ नहीं मिलता है। अनमोल समय वृथा मत गमाते रहो, व्यसनों में जीवन मत बरबाद करो, भजन करो, भजन करो, भजन करो। बस विशेष क्या कहें, विचार शील पुरुष स्वयं ही समझ लें गे।

आप सब का शुभ कांक्षी पुरुष धर्माऽचार्य
रघुनन्दन दास राजौरी ॥

श्री पुरुष धर्माचार्य महर्षि रघुनन्दनदास विरचितः
श्री पुंधर्म भजनामृतस्याऽष्टमः प्रमोदः ॥

अथ परमेश्वरस्तवः

श्लो०

नत्वा विभुं परं नित्यं पुंधर्म भजनाऽमृतम् ।
सेवध्वं पुरुषाः सर्वे भक्त्यादिभिः करोम्यहम् ॥१॥
यस्य निपाठमात्रेण भक्त्या नन्दः प्रकाशते ।
सर्व पापानि नश्यन्ति परं ज्ञानं च विन्दति ॥२॥

भक्त्यामृतं तस्य पिवेत नित्यम्
राज्यं धनादीनि मृषा विदित्वा
संसार स्वप्नं क्षण भंगमस्ति
मृत्योस्तया यास्यथ पारमेव ॥ पु० अ० ॥ २७

दो०

जय परमेश्वर कर दया, दो सुख संपति राज ।
तुमरे सुमिरण भय मिटें, सिद्ध होत सब काज ॥१॥
प्रेम सुधा रस दे प्रभो, दुर्मति पाप नसाय ।
पुरुष धर्म को सब नमें, दो अब अमल कराय ॥२॥
अज पवित्र पुंधर्म को, जो सेवत मन लाय ।
सो पावत प्रभु आप में, परमाऽऽनन्द समाय ॥३॥

सो प्रभु बाहिर भीतरे, सब दिशि रहा समाय ।
रघुनन्दन उस को भजो, सब पाखण्ड हटाय ॥४॥
पापिन को भावत नहीं, ज्ञान कथा सत्संग ।
रघु नन्दन वह दिवस निशि, सेवत पाप कुसंग ॥५॥
व्यसनों को भटका फिरे, भक्ति सुधा नहीं पाय ।
रघुनन्दन वह मूढ़ नर, जीवन रहा गमाय ॥६॥
चौ०

त्वं प्रभु परम पुरुष अविनाशी । शुद्ध मुक्त सब घट घट बासी ॥
एक अनन्त सदा सुख राशा । प्रभु तेरा सर्वत्र प्रकाशा ॥
ज्ञान रूप माया तम पारी । अगुण अभेद सदा अविकारी ॥
अमन अगोचर अमल अरूपा । अकथ अलेप अनादि अनूपा ॥
सब ज्योतिन में ज्योति तुम्हारी । एक नित्य सब बीच विहारी ॥
सर्व शक्ति मय एक विराजो । दशों दिशा शोभा सब साजों ॥
सदा सर्व का करत न्याय । जानत हो प्रभु विन ही जनाय ॥
ज्ञान बुद्धि बल देत सदाई । रघुनन्दन सब भेद हटाई ॥

दोहा

सर्व विश्व तुम से विभो, उपजावत लय होय ।
तुम दयाल पालक सदा, तुम बिन और न कोय ॥
दो दर्शन जगदीश्वर, सब तम मोह हटाय ।
रघुनन्दन पाखण्ड के, भय दुःख पाप नशाय ॥८

चौपाई

तव भय काल चक्र भरमाई । सर्व भुवन ये रहे थमाई ॥
तव भय सूर्य प्रकाश तपावे । वात गमन सब ठौर जनावे ॥

तव भय पावक रहा जलाई। तव भय वृष्टि घन गरजाई॥
तव भय सब ऋतुयें चलि आवें। गमनागमन विलंब न लावें॥
तव भय मृत्यु रहा नशाई। तव भय जीव रहे फल पाई॥
तव भय सुख दुःख संपति आवें। चन्द्र कला नित बधत घटावें॥
तव भय लोक पाल सब देवा। कर कर कर्म जनावत सेवा॥
तव भय व्यसनी रहा भलाई। मुड़ मुड़ मोह जाल गल पाई॥
तव भय पाप रहे चमटाई। पापन मे तन मन धन लाई॥
मनुज दनुज सब जीव विचारे। रघुनन्दन सेवत भय मारे॥ १८

दोहा

तव भय माया जगत में, सब को रही फसाय।
जन्म मरण में ला रही, विषय जाल लपटाय॥
अब प्रभु हमरे भय हरो, अपने शरण लगाय।
रघुनन्दन संसार के, सब दुःख भरम हटाय॥ १०

चौपाई

प्रकृति गुण प्रभु तव सिवकाई। करत सदा जो जो रुख पाई॥
पंच भूत सेवत हरषाईं। सेवत ग्रहा काल मन लाईं॥
ब्रह्मा शिव सेवत मन लावें। सनकादिक तुमरे गुण गावें॥
यम कुबेर इन्द्रादिक भारी। सब लेवत प्रभु शरण तुम्हारी॥
वरुण दिशेश्वर तव यश गावें। लोकेश्वर नित ध्यान लगावें॥
देवी सर्व करत तव सेवा। धर धर शिर पूजत सब देवा॥
सिद्ध गणेश भजत गुण गाईं। सेवत सर्व वीर मन लाईं॥
भैरव भूत सदा हिय धारें। मुनि गण तब हिय रूप निहारें॥
दनुज मनुज कोटन विध गाईं। गाइ गाइ तब भेद न पाई॥
जो सेवत तुमको मन धारी। रघुनन्दन तिन पाप निवारी २६॥

दोहा

तुम सब के महाराज हो, सब तुमरे आधार ।
तुम कर सब बल पा रहे, ज्ञान सुबुद्धि विचार ॥
मैल कपट सब दूर कर, प्रभु अब लो अपनाय ।
रघुनन्दन निज प्रेम का, हम को सुधा पिलाय ८ ॥

चौपाई

तब सुमरण सब रोग विनाशें । तब सुमरण दुशमन सब नाशें ।
तब सुमरण हो ज्ञान प्रकाश । तब सुमरण भय शोक विनाश ।
तब सुमरण जय संपति पावें । तब सुमरण भव मूल नशावें ॥
तब सुमरण सब पाप नशाईं । बन्ध कटा सुख सहज समाईं ॥
तब सुमरण सब भरम कटावें । मोह काम तम दूर हटावें ॥
तब सुमरण निरलेप रहाई । नीच शुद्ध ऊंचे पद पाई ॥
तब सुमरण सब विघ्न मिटावें । पाखंडिन के तिमिर नशावें ॥
पुरुष धर्म में देत रलाई । सर्व अविद्या दूर हटाई ॥
तव सुमरण पूरत सब काम । सुमर सुमर भाषत हिय राम ॥
तुमरे भजन मुक्ति पद पावें । रघुनन्दन फिर बहुरिन आवें ६६ ।

दोहा

नाम सुधा रस दे प्रभो, सदा रहें मन लाय ।
दूर करो सब वासना, दो अब प्रेम रलाय ॥
जो तुमरे शुभ नाम का, करत सदा रस पान ।
रघुनन्दन भव भय मिटा, पात स्वर्ग में मान १० ।

चौपाई

तुमें जान पूरैं सब आशा । तुमें जान षड रिपू विनाशा ॥
तृष्णा जो निशि दिन भटकावे । तुमें जान थिर रूप रहावे ॥

तुमें जान किस का भय नाहीं । निर्बल सबल होत सब पाहीं ॥
नाना मत के भरम हटाई । तुमें जान सांचा मग पाई ॥
जात देव जेते अभिमाना । छूटैं यथा स्वप्न भ्रम नाना ॥
पुरुष धर्म में रहे समाई । फिर नहिं माया जाल फसाई ॥
दशों दिशा सब में जय पावें । सब ऊपर महाराज कहावें ॥
तुमें जान तव रूप समाई । रघुनन्दन भव बन्ध कटाई ४४॥

दोहा

अविनाशी तव रूप को, दे प्रभु हमें जनाय ।
माया के परपंच की, दुर्मति मैल हटाय ॥
क्षमा करो अपराध सब, अपने शरण निहार ।
रघुनन्दन अब कर दया. हरो कष्ट संसार ११ ॥

चौपाई

प्रभु कर अब संशय सब दूरी । कर प्रभु अब आशा सब पूरी ।
दूर करो अज्ञान हमारा । कर दयाल सब भांत सुधारा ।
प्रभु कर हमे समान रलाई । आपस के सब वैर मिटाई ।
कर स्वतन्त्र अब दीन दयालु । हम बालक तुम पिता कृपालु ।
प्रभु हमरे अपराध अपारा । अघमोचन शुभ नाम तुमारा ।
जात देव मत-भेद मिटा दो । आपस में अब प्रेम रला दो ।
दो शुभ बुद्धि हमें सुखदाई । परमारथ में रहें समाई ।
तुमरा प्रेम सदा मन धारें । रघुनन्दन सब आश विसारें ।

दोहा

बुरी दशा सब दूर कर, साध हमारे काज ।
बालन पर करुणा करी, वधा सर्व सुखसाज ॥
परम पिता तुम हो सही, सबके सिरजनहार ।
रघुनन्दन बल ज्ञान दे, कर भवसागर पार ॥

चौपाई

प्रभु दे तव भक्ति सुखदाई । औरण की सब आश हटाई ।
तुमें सदा सेवें मन लावें । औरण के सब भरम नशावें ।
करैं परस्पर रक्षा आपै । कायरता त्यागें सब पापै ।
अपना बिगड़ा आप सुधारें । अपना घर अब आप संवारें ।
सदा रहें तुमरे हम दासा । गैरण के अब वसै न पासा ।
अब दीनन पर दया विचारो । पराधीन के कष्ट निवारो ।
दे प्रभु सुमति एक कर जोरा । जिसकर विजय होय चहुं ओरा
ना छल वैर परस्पर लावें । रघुनन्दन रल एक रहावें ।

दोहा

पुरुष धर्म सेवें सदा, घर घर करें प्रचार ।
पढ़ें पढ़ावें अब सदा, सद्विद्या मन धार ॥
पांडव राम भरत सम, कर प्रभु प्रेम वधाय ।
रघुनन्दन ठग जाल से, लो अब हमें बचाय १६ ॥

चौपाई

तब प्रभु विमुख जीव दुःख पाईं । काल कर्म गुण दोष फसाईं ।
नाना मत में वे भटकावें । प्रभु तव विमुख न संशय जावें ।
जन्म कर्म नाना भय पाईं । दीन हीन बल रोग सताईं ।
भूले मृग तृष्णा भटकावें । पाखण्डिन के जाल फसावें ।
सदा मोह वश पाप कमाईं । प्रभुतव विमुख न मार्ग पाईं ।
आशा तृष्णा कभी न जावें । शंख द्रव्य पर रंक रहावें ।
कर कर वैर परस्पर जूझें । प्रभु तव विमुख कुमार्ग सूझें ।
पर सेवा कर जन्म बिताईं । पराधीन नाना दुख पाईं ।
सत विद्या सुख तेज नशावें । सदा अविद्या तिमिर दबावें ।
रघुनन्दन दुखमय सब भाषें । प्रभु तव विमुख न भवभय नाशें ।

दोहा

अब प्रभु न हमको कभी, विमुख करो विलगाय।
भूले पर वश जनन की, करो कृपाल सहाय ॥
लगे रहें तुम से सदा, तन मन प्रेम रलाय।
रघुनन्दन पाखण्ड का, स्वपने ध्यान न जाय ॥

चौपाई

तुम विन को जग में हितकारी। प्रभु विन कौन करे भवपारी।
तुम सब के हितकार कृपाला। परम पिता पालक सब काला।
तुम विन को प्रभु हमें सुधारे। तुम विन को भव रोग निवारे।
तुम विन संशय कौन हटावे। तुम विन को शुभ ज्ञान सिखावे।
तुम विन को जय हमें दिलाई। सर्व भूमि पर राज्य वधाई।
तुम विन कौन कुमत सब नाशे। तुम विन को मतभेद विनाशे।
स्वारथ का प्रभु सब संसारा। तुम विन को सतबन्धु हमारा।
तुम विन को सुध लेय हमारी। जो आपत सब देय निवारी।
तुम विन और नजर नहिं आवें। हम अब जिनसे प्रेम लगावें।
प्रभु अब नजर करो हम पाहीं। रघुनन्दन तुम सम को नाहीं।

दोहा

अपना हि अब जान प्रभु, बालक दीन अजान।
पाप ताप सब तम हरो, दे निज भक्ति ज्ञान ॥
जात पात मत भेद कर, भूल गए सब काज।
रघुनन्दन कैसे मिलें, बल विद्या जय राज ॥
स्वारथ को पाखण्डिये, झूठे मजब बनाय।
भारत को अज्ञान में, दिन दिन रहे गिराय ॥
भिन्न भिन्न उपदेश कर, वेष रहे चमटाय।

प्रजा अधम तम पा रही, संशय जाल फशाय ॥
जब तक होय न प्रेम रस, होय न तत्व बिचार ।
तव तक मिथ्या पतन को, सकै न कोई टार ॥
एक जात सब मिल रहो, एकै धर्म विचार ।
पी कर अमृत प्रेम का, करिहो तभी सुधार ॥
नमः सर्व व्यापक प्रभु, सत्य अनन्त अपार ।
अजय एक पावन तुहि, नमः सर्व आधार ॥
जो परमेश्वर स्तवही, प्रात पढ़हि वा स्याम ।
पाप तिमिर सब नाशहीं, सिद्ध होहिं मन काम ॥
प्रेम लगा कर पढ़ सदा, मन के कपट हटाय ।
रघुनन्दन जगदीश की, होगी दया सहाय ॥२७॥

॥ इति श्री परमेश्वरस्तव समाप्त ॥

———

अथाक्षर प्रकाशः

दोहा

परम पुरुष से प्रेम कर, मृत भक्ति अब त्याग ।
जो नवनित्य अनन्त बिभु, वृथा स्वपन से जाग ॥
देशभक्ति विभु धर्म की, सेवा कर मनलाय ।
रघुनन्दन नभ दूध की, आशा वास हटाय ।

चौपाई

कक्का क्या मन फिरत भुलाई । परम पुरुष की ले शरणाई ।
वृथा भर्म कर कर भटकावे । जन्म मरण नाना दुख पावे ।
खख्खा खोज भक्ति रस पाई । घट घट में प्रभु रहे समाई ।
एक रूप देखो सब जोई । प्रभु बिन दूजा और न कोई ।
गग्गा गुण प्रभु के नित गावो । गाय गाय भव रोग मिटावो ।
धन यौवन सब जान विनाशी । जगत भोग दुःख सूल विकाशी ।
घघा घट घट व्याप रहाइ । उस प्रभु से अब कहा छिपाई ।
सब प्रभु को हैं एक समाना । भेद भाव किमि करत अजाना ।
चच्चा चंचलता सब त्यागो । मोह निशा सोवत से जागो ।
सब सन प्रेम करो सुख दाई । वैर भाव सब दूर हटाई ।
छछा छल बल तजो विकारा । कर अब राम नाम आधारा ।
कूड़ कपट सब तजो बुराई । आपस में अब करो भलाई ।

जज्जा जान सबी जग स्वप्ना। प्रभु बिन और नहीं को अपना। १३
अब वे कर्म करो मन लाई। यहां सुयश पर लोक भलाई।
झझ्झा झेर न करो पियारे। काल रहा शिर घात विचारे।
कर नित भक्ति गंग असनाना। फिर ना लगैं जगत मल नाना।
टट्टा टोर भरम संसारा। न पितु मात भ्रात सुत दारा।
हरि बिन को तेरा हितकारी। हरि बिन कोन करै भव पारी।
ठठ्ठा ठग का त्याग कुसंगा। वे नित करत भजन में भंगा।
संत जनन से प्रीत लगावो। पाखण्डिन के भरम हटावो।
डड्डा डर मन का सब त्यागो। प्रभु सन अभय होय अनुरागो।
जंगल घाट पहाड़ मशाना। सर्व ठौर एकै भगवाना।
ढढ्ढा ढूंडत कहां भुलाई। हृदय देख अब प्रीत लगाई।
बाहिर भीतर सर्व प्रकाशी। सदा अभेद एक अविनाशी।
तत्ता तर भव सागर भाई। निज प्रभु से अब भेद मिटाई।
मृग तृष्णा अब क्या भटकावे। वृथा तैल हित रैत पिरावे।
थथ्था थोरे जीवन काजा। क्या ये वृथा सजावत साजा।
अब ऐसा शुभ साज सजावो। जा सों अवनासी पद पावो।
दद्दा दर दर क्या भटकावे। पेट भरण क्या वेष बनावे।
सांचा प्रभु सेवो मन लाई। जा सों परम अचल धन पाई।
धध्धा धर्मी वह जग माहीं। जिस में कूट कपट छल नाहीं।
आपस में जो बैर वधावे। वह पापी बहु नीच कहावे।
नन्ना वह नर अधम कहाई। जो आपस में भेद डराई।
नाना पंथन जो भटकावे। जो मूरख निज धर्म गमावे। ३४

पप्पा पड़ा पड़ा दुःख पाई। आलस कर कर जन्म गमाई।
विद्या गुण सीखो मन लारे। कर पुरुपार्थ सब सुख पारे।

फफ्फा फल पावत नर जाई। जैसा कर्म करत नित सोई।
शुभ कर्मों में प्रीत लगावो। तासों तुम सुख सम्पति पावो।

बब्बा वर्षा कर सुखदाई। जासों प्रेम सुमति गुण आई।
सब नर नार भक्ति रस पावें। भेद भरम सब पाप हटावें।

भभ्भा भरम न फिरो भुलाई। जो अपना सुख चाहे भलाई।
एकै धर्म रहो मन धारी। पन्थन के सब भरम निवारी।

मम्मा मोह तिमिर सब नाशो। सभी परस्पर ज्ञान प्रकाशो।
ज्ञान बिना अन्धे भटकावें। बुरे कर्म सब तिन्हें दबावें।

यय्या यत्न करो अब भाई। यत्न किये सब काम सधाई।
यत्न किये भूपति पद पावें। इन्द्र होय सुर लोक सिधावें।

रर्रा रक्षा करो सदाई। दीन दुखिन को तजो न भाई।
धीर वीर जग में नर सो हैं। पुरुष धर्म के रक्षक जो हैं।

लल्ला लाल होत तिन माहीं। ये नर नार विषय सुख नाहीं।
विषयों कर सब धर्म नशावें। विषयी लोग निर्वंश रहावें।

वव्वा वर्ण ऊंच सो होई। जिन के कर्म ऊंच हैं सोई।
लोक जात में ऊंच कहावे। कर्म नीच तद नीच रहावे।

सस्सा सत गुरु की शरणाई। नीच ऊंच पद सहज समाई।
सत गुरु चरण में भरम निवारें। सत गुरु भव जल पार उतारें।

शश्शा शरण शरण शरणाई। कृपा करो अब शरण लगाई।
हम बालक तुम पिता कृपाला। को पालक तुम सम सब काला।

हाहा हाथ पकड़ प्रभु लीजे। भव सागर प्रभु पारी कीजे।
प्रेम सुधा रस पान करावो। जन्म मरण भव रोग मिटावो।

झाझा ज्ञान का करो प्रकाश। हो वही जासु अविद्या नाश।
लो अब निज सुख रूप रलाई। रघुनन्दन सब भेद हटाई।

जो अक्षर प्रकाश को, पढ़त प्रेम मन लाय।
पाप रोग भय नाशहीं, ज्ञान भक्ति बल पाय। ३

सत बिचार संतोष मन, पाप कुबुद्धि नशाय।
रघुनन्दन सुख पाय सब, परम पुरुष दरशाय। ४

इति श्री अक्षर प्रकाश समाप्तः

———

अथ श्री विनय यज्ञः

हे परम पुरुष पुरुषेश्वर सर्व शक्तिमान सर्व व्यापी निराकार, सर्वाधार, सर्व कर्त्ता, सर्व स्वामी, पालन कर्त्ता परम पिता आप की ही दया से सर्व-प्रकार के सुख मंगलों की प्राप्ति होती है। इस से हम सब पर सदा दयालु प्रभव ॥ टे० हे प्रभो आप ही हमारे चारों तरफ सर्व दिशाओं में अनन्त रूप से सदा अविनाशी और सब में प्रकाशमान पूर्ण रूप से सर्वत्र प्रकाश रहे हो, और आप का ही पवित्र प्रकाश सर्व जगाहों में चारों तरफ से सब को सदा प्रकाश दे रहा है। और हे प्रभो ! आप के ही महा बल से यह सब अनन्त कोटी ब्रह्माण्ड आकाश मण्डल में अधर ठहरे हुए हैं, और आप का ही बल सर्व संसार को चलाता हुआ चारों तरफ से सर्व कार्यों को सिद्ध कर रहा है। हे परम पिता ! सर्वज्ञी अविनाशी देव आप की महिमा को हम सब क्या कहें, जो बाणी से परे अनन्त है पर जो कुछ हम सब कहते हैं, वह भी सब आप की ही दया का प्रकाश है। हे सर्व के पालनकर्त्ता परम पिता आप ने ही स्वर्ग नरकादि भोगस्थान और अनन्त भोग्य पदार्थ सर्व प्राणियों के लिये सर्वत्र रचे हैं और सर्व जगहों में सर्व पदार्थ आप की ही दया से हम सब सदा पा रहे हैं। और आप के ही दिये हुए दानों को पाकर सुख से जीवन बिता रहे हैं। अब हे पिता हम सब को ऐसी बुद्धि बल विद्या प्रदान करो, जिस कर हम कुभाषामतों को भारत से हटा

सदा भारत विद्या का ही बर्ताव किया करें, और नष्ट हुए भारत के देशों को वापस लेकर सदा भारत की रक्षा किया करें, और दुराचारियों में हम सब सदा विजय को ही प्राप्त होते रहें। और हे प्रभो ! आप ही हमारे मन मन्दिरों में निवास करते हुए सदा सर्व प्रकार के ज्ञान प्रदान कर रहे हो आप ही हमारे ज्ञान दाता, हितकारी, सद्गुरु हो हमारी चारों तरफ से आप को नमस्कार हो २॥

हे परम प्रभो हे सर्वत्र प्रकाशमान जगद् गुरु परम पिता हम सब अब कभी भी भूल कर पाखण्डों वा पाखंडियों को शिर न झुकावें और सब पाखण्डों को त्याग कर एक हो कर आप के पवित्र अविनाशी पुरुष धर्म में चलते हुए पाखण्ड पापों को तोड़ कर आप के धर्म का प्रकाश सब जगहों में सदा फैलाते रहें और हे देव ! परस्पर अब बैर निन्दा घृणादि पापों को कभी भूल कर भी न करें, सदा मिल कर रहें, परस्पर में हित करें सब को समान देखें, और हे प्रभो हमारे मिथ्या जाति पापों को नाश करके अपनी पवित्र अविनाशी पुरुष जाति प्रदान करो, जो सब को अपने में रलाने वाली सर्व शक्ति मयी सिद्धस्वरूप सब सुख सिद्धियों के देने वाली है। और हे पिता हमारे भय शोक रोगादि कष्टों को दूर कर हम सब आप ही के दास हैं। हमारा विनय यज्ञ स्वीकार करो ३॥

हे परम० सर्वान्तर्यामी देवों के देव हे सर्व सुख मंगलों के दाता हे प्रभो ! हमारे भेदादि सर्व पापान्धकारों को नाश कर और अपने एक ही पुरुष धर्म में हम सब को लेकर एक करके परस्पर में प्रेम प्रदान कर। और हे पिता हमारी भेदादि सब

पाप दृष्टियों को नाश करके मित्र दृष्टि प्रदान कर जो हम सब परस्पर में मित्र दृष्टि से देखें। और आपत्काल में हम सब अपने प्रिय पुरुषों को धन बल से सदा साथ दें, और हे पिता हम सब को आलस घृणा भेदादि पापान्धकारों में अब कभी मत गिरा और पाखण्ड नाश के लिये हमें बल प्रदान कर अभय दान दो पराधीनता के कष्टों को हटा कर सदा के लिये स्वाधीन कर, और हे पिता हमारे दुश्मनों को नाश करके सब जगहों में हम को विजय प्रदान कर और सब देशों में हमारा ही स्वराज्य स्थापित करके हमारी रक्षा कर' ज्ञान भक्ति प्रदान कर और हम को अपने ही प्रेम के पात्र बना, और हे पिता सर्व सुख मंगलों में हमारा पवित्र जीवन कर, और हम को अपनी प्राप्ति का पवित्र मार्ग दिखा, और यदि हम आप को माया वश भूल जाएं तो हमारे सर्वापराध क्षमा कर दो हम सब आप के ही अजान पुत्र हैं और आप ही हमारे पालन-कर्त्ता परम पिता हो, और हे प्रभो अन्त में दुःख रूप सर्व संसार के बन्धनों से मुक्त करके सदा के लिये सुख स्वरूप मुक्ति प्रदान कर, अब हे परम दयालु प्रभो अन्त में हमारी आप को बार २ सहस्र सहस्र प्रणामें हों ॥ ४ ॥

॥ इति श्री विनय यज्ञ समाप्तः ॥

अथ श्री विनय मंत्रः

जय जय राम हरे प्रभु जय बल धाम हरे।
सर्व जगत के संकट तुम सब दूर करे ॥ टे०
अकथ स्वरूप मनोहर श्वेतवसन धारी । प्रभु०
शरद इन्दु मुख शोभा मंदहसन प्यारी ॥ १ जय०
क्रीट मुकट शिर शोभित कुण्डल कानन में । प्रभु०
जगमग ज्योति प्रकाशित, रत्न माल गल में ॥१ जय०
धर धनुबाण भुजों में, पर हित रूप धरा । प्रभु०
माया रहित परम शुभ, अतुलित तेज भरा ॥३ जय०
अरुण नयन प्रभाकर रवि शीतल भासे । प्रभु०
ध्यान धरत सुख पापत, मोह तिमिर नासे ॥४ जय०
ब्रह्मशिवादि भजत नित पूजत ध्यान धरें । नित०
चारों वेद विमल यश गावत शीश धरें ॥५ जय०
राक्षस सर्व भूमि के तुम ने नाश किये । प्रभु०
सुख से प्रजा बसा कर निर्भय दान दिये ॥६ जय०
बाहिर भीतर तुम हो सब को धार रहे । प्रभु०
देकर ज्ञान बुद्धि बल भव निधि तार रहे ॥७ जय०
तुम सब के हित कारण तुम अन्तर्यामी । प्रभु०
पालक सर्व शक्तिधर तुम सब के स्वामी ॥८ जय०
दो निज धर्म भक्ति बल कुमति दूर कीजे ।प्रभु०
भूले फिरत पाप वश अब अपना लीजे ॥ ९
तुमरे जन्म भक्ति पर पाप कटें तन के । प्रभु०

Lal Dass ji   Conducter of bus.

पा कर राज्य विजय बल भर्म मिटें मन के ॥ १० जय०
संध्या प्रात विनय ये प्रेम सहित गाते । नित०
रघुनन्दन यश पाकर परम धाम पाते ॥११ जय०

अथ द्वितीय विनय महा मन्त्रः

जय परम पुरुष विभो जय जय सुख धाम विभो ।
दो सुख राज्य सुमति बल कर दुःख दूर प्रभो ॥ टे०

एक अगम्य अगोचर तुम हो सुख दाई । प्रभु०
व्यापक तुम्हें जान कर निर्भय पद पाई ॥ १ जय

दया दृष्टि अब करुणा हम सब पर कीजे । प्रभु०
संमति ज्ञान वधा कर निर्भय पद दीजे ॥२ जय०

मात पिता तुम पालक शरण पड़े आई । प्रभु०
बालक जान निवारो भव भय दुःख दाई । जय०

तुम करुणा गुण सागर नित पालन करता । प्रभु
हम दुर्गुण परिपूर्ण तुम प्रभु भय हरता ॥४ जय०

माया सहित तेज तव भाषत सुख कारी । प्रभु०
बाहिर भीतर सब के प्राण वुद्धि धारी ॥५ जय०

तुमरे ध्यान भक्ति कर पाप कटें तन के । सब०
पाकर ज्ञान धर्म बल भरम मिटें मन के ॥६०

सुख संतोष प्रकाशत तुमरा ध्यान किये । प्रभु०
शान्ति अचल पद संपति पाय स्वरूप हिये ॥७ जय०

सर्व शक्ति मय तुम हो तुम से होत सभी। प्रभु०
जैसा होत अनुग्रह होवत सिद्ध तबी ॥८ जय०

हरो कष्ट भारत के सब में मंगल पूर करो। प्रभु०
सुख से प्रजा वसा कर भय दुःख पाप हरो ॥९ जय०

सब नर नार सदा अब तुमरे गुण गावें। प्रभु०
पुरुष धर्म में आकर परम मुक्ति पावें ॥१० जय०

संध्या प्रात विनय पद ये जन नित गाते। प्रभु०
रघुनन्दन सुख पाकर अचल धाम पाते ॥ जय०

———

अथ श्री देव वाणी महा मन्त्रः

परम पुरुष को भजा करो अब सब पाखण्ड हटा करके ॥टे०

पुरुष धर्म की सेवा कर अब तन मन धन लाना चाहिये ।
नित्य यज्ञ में मिल करप्रभु का प्रेम सुधा पाना चाहिये ॥
एक अखण्ड विभु अविनासी से अब मन लाना चाहिये ।
और देव मिथ्या पन्थों का मन से भर्म नशा करके १ । प०

एक जात है पुरुष तुम्हारी पुरुष धर्म दिखलाता है ।
मिथ्या वर्ण जाती जालों से आकर तुम्हें बचाता है ।
बन्धन काट देत निर्भय पद सुख से तुम्हें बसाता है ।
पाखण्डिन का भेद भाव भारत से मूल पटा करके २ ॥ प०

होकर एक बसो भारत में भारत देश तुम्हारा है ।
विदेशियों का इस भूमि पर जरा नहीं अधिकारा है ।
मिल कर राज्य करो भारत का कर कर आप सुधारा है ।
भारत को अब शुद्ध बना लो भारत पुरुष कहा करके ६॥

विदेशियों की मत भाषा को भारत में नहीं आने दो ।
पढ़ो नहीं मत सुनो कभी भारत से पाप हटाने दो ।
भारत विद्या देव नागरी घर घर सवे पढ़ाने दो ।
भारत का अज्ञान नशा दो संस्कृत सवे पढ़ा करके ॥४ प०

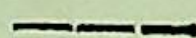
एक पिता के पुत्र सभी हो घृणा वैर हटा दो जी ।
रक्षा मिल करो परस्पर निर्भय सवे बसा दो जी ।

रण विद्या अब सबे सिखा कर रण में धीर बना दो जी ।
भारत को अब स्वर्ग बना दो दुश्मन पाप खपा करके । ५ प०

पुरुष धर्म भास्कर को पाकर क्या अब दीन रहाते हो ।
और मतों के पुस्तक पढ़ पढ़ क्या भ्रम जाल फंसाते हो ।
सत्य स्वरूप सूर्य जब पाया क्या तब दीप जगाते हो ।
सब अज्ञान दुःखों से तुम को लेता सदा बचा करके । ६ प०

देश धर्म परमेश्वर भक्ति परम स्वतन्त्र बनाती है ।
सब पाखण्ड पाप तम हर कर दुःख से सदा बचाती है ।
दे कर ज्ञान बुद्धि बल निर्मल परम पुरुष दरशाती है ।
देत अभेद सुधा रस प्रभ का बन्धन पाप मिटा करके । ७ प०

व्यसनासक्त मूढ़ दुर्बुद्धि भटक भटक दुख पाते हैं ।
इस संसार स्वप्न सागर में मुड़ मुड़ गोता खाते हैं ।
विषय वासना त्याग जिन्होंने, पुरुष भक्ति मन लाते हैं ।
रघुनन्दन ते पाप परम पद भव दुख जाल पटा करके । ८ प०



श्री आकाश वाणी

सुनो प्यारे भारत के नर नारी सत्य विचारा है।
इस भूमि पर विदेशियों का जरा नहीं अधिकारा है। टे०
अब तो सत्य विचार करो सब कौम धर्म के रक्षण का।
बुरी दशा तुमरे शिर गाजे अपने आप बचावन का।
दुष्ट जनों से मेल करो मत करके भरम सुधा रण का।
इनके संग सदा दुख उपजें कभी न होत सुधारा है।१।

पाखंडी तुम को भरमा कर नाना देव पुजाते हैं।
पाप जाल फैलाय वेष धर धर कर तुम्हें फशाते हैं।
भेद पाप अज्ञान वधा कर सब को दीन बनाते हैं।
इन ठगियों से बचो सभी अब झूठा जाल पसारा है।२। सु०

ठगिये तुम्हें लोभ के कारण झूठी कथा सुनाते हैं।
शनि राहु केतु का तुम को भर्म जाल दिखलाते हैं।
ले ले कर सब दान तुम्हारा पाप कर्म में लाते हैं।
तुम सब के मरने की आशा में दिन रात गंवाते हैं।
इनको तजो कभी मत भूलो मृग-तृष्णा जल धारा है।३। सु०

पुरुष धर्म का डंका अब तुम सर्व दिशा में बाजन दो।
पाखंडिन के पाप तिमिर को अब तुम दूर हटावन दो।
पाखंडिन को शुद्ध बना कर पुरुषन में रल जावन दो।
हटो नहीं मत डरो किसी से कर कर धर्म प्रचारा है।४। सु०

वीर स्वभाव करो आपस में कायरता सब दूर करी
मिल कर एक रहो भारत में प्रेमसुधा रस पान करी।
सदा परस्पर करो भलाई भेद पाप सब नाश करी।
विदेशियों का तिमिर हटा कर करलो आप सुधारा है।५। सु०

भारत को अब शुद्ध बना लो कंटक बीज नशा करके।
मिल कर काम करो भय त्यागी दुश्मन मूल पटा करके।
पाछे कदम कभी मत डालो भारत वीर कहा करके।
दुष्टजनों को मार मुका दो पा कर परम इसारा है।६। सु०

भारत है भारतवासिन का सदा काल से आता है।
पुरुष धर्म है मूल इसी का इस कर सब कुछ पाता है।
सर्व जगह अधिकार सभी पर भारतीयों का रहता है।
इस भारत में विदेशियों का रहना पाप कहाता है।७। सु०

हो तुम पुरुष पुरुष सेवा में तन धन मन लाना चाहिये।
घर घर में अब पुरुष धर्म का परम राग गाना चाहिये।
दुर्बलता सब त्याग परस्पर पुरुष भाव आना चाहिये।
रघुनन्दन भारत भूमि पर दुर्लभ जन्म तुम्हारा है।८। सु०

———

अथ श्री दोहा प्रकाशः

परम पुरुष को जानकर, होत अविद्या नाश ।
सर्व सिद्धि सुख उपजें, पा कर ज्ञान प्रकाश ॥१॥
परम पुरुष को भज सदा, जो मंगल सुख धाम ।
हरत अमंगल पाप दुःख, सिद्ध होत सब काम ॥२॥
परम पुरुष से प्रेम कर, जो थिर सदा रहाय ।
मृग तृष्णा के नीर की, आशा वास हटाय ॥३॥
परम पुरुष सब ठौर है, व्यापक नित्य अथाय ।
रघुनन्दन उस प्रेम से, सहज परम पद पाय ॥४॥
अब नर नारी तजो भ्रम पाखण्डिन का ध्यान ।
रघुनन्दन मिल कर रहो, करो प्रेम रस पान ॥५॥
प्रेम बिना दुःख पावहीं, बधत बैर तम छाय ।
रघुनन्दन उनका सबी, दिन दिन जात नशाय ॥६॥
विना प्रेम के यतन सब, दुख कर निष्फल जाएं ।
रघुनन्दन जिमि नीर मथे, कभी न नर घृत पाएं ॥७॥
एक पिता के पुत्र हो, एक तुम्हारी जात ।
आपस में रघु नन्दन, वृथा करत हो घात ॥८॥
दावे कर कर मूर्खा, तन धन रहा गलाय ।
रघुनन्दन इस जन्म को दिया पाप में लाय ॥९॥
जिन के घर से उठ गये, हरि चर्चा शुभ ज्ञान ।
रघुनन्दन उन का भवन, नरक मसान समान ॥१०॥

सदा तुम्हें पाखण्डिये, जात मते दिखलाये ।
रघुनन्दन भ्रम कूप में, तुम को रहे गिराये ॥११॥
स्वार्थ को माया रची, तुम को रहे लुटाय ।
रघुनन्दन पाखंड के, झूठे जाल फसाय ॥१२॥
धर्म नहीं वह प्रेत है, शुद्धि देख नश जाय ।
रघुनन्दन उस धर्म को, तज दो शीश झुकाय ॥१३॥
अविनासी यह धर्म है, वधत नाश नहिं पाय ।
रघुनन्दन शुद्धि करो, सब को लेयो रलाय ॥१४॥
और पाप सब करत नित, शुद्धि देख घुर्राय ।
रघुनन्दन सोपात की, अपना रहा नशाय ॥१५॥
तीर्थन को भटका फिरे, ईश्वर विमुख अबुद्ध ।
रघुनन्दन सुन मूर्खा, तिन कर होत न शुद्ध ॥१६॥
विमुख किये भगवन्त से, ठगिये तीर्थ बनाय ।
रघुनन्दन तज दो अब, क्यों धन रहे लुटाय ॥१७॥
मिथ्या तीर्थन में सदा, रहत जिनों का ध्यान ।
रघुनन्दन जल चरण में, धरहिं जन्म अज्ञान ॥१८॥
परम पुरुष इक तीर्थ है, अज पवित्र सुखधाम ।
रघुनन्दन सब अघ मिटें, सेवत पूरहिं काम ॥१९॥
भजो सभी अब एक हो, तज कर सभी पखण्ड ।
रघुनन्दन तुमरा तबी, होगा राज्य अखण्ड ॥२०॥
नाम रूप यह विश्व सब, उपजावत लय होय ।
रघुनन्दन उस पुरुष से, करता और न कोय ॥२१॥

दिया किया उसका सभी, भोगत हो दिन रात ।
रघुनन्दन अब भजन से, क्यों मुख वृथा छिपात ॥२२॥

भूलो मत मन से कभी, प्रभु सेवा उपकार ।
रघुनन्दन भव दुखन से, जो चाहत निरवार ॥२३॥

जो माया के कार्य को, सेवत हैं नर नार ।
रघुनन्दन उनका सवी, विफल होत संसार ॥२४॥

जो नहिं सेवत पुरुष को, औरण में रत होय ।
रघुनन्दन उसका कभी, मुख देखो मत कोय ॥२५॥

वेषण के तुम सेव का, मत होवो नर नार ।
रघुनन्दन ये देश को, अधो गिरावण हार ॥२६॥

पाखण्डिन को दान सब, होवत पाप समान ।
रघुनन्दन दुख ऊपजें, सेवा निष्फल जान ॥२७॥

चिलम तमाकू में सदा, रहत जिनों का ध्यान ।
रघुनन्दन पाखण्डिये, वधा रहे अज्ञान ॥२८॥

अमल तमाकू पाप ने, राम दियो विसराय ।
पापी भया मलीन मन, पाप रहे चमटाय ॥२९॥

झूठे यश के कारणा, मन्दिर रचत महान ।
रघुनन्दन भगवन्त का, करा रहे अपमान ॥३०॥

धमसाल मन्दिर रचें, पाखण्डिन को दान ।
रघुनन्दन हरि भक्ति नहिं, न ईश्वर हित जान ॥३१॥

इन्द्र धनुष मरु नीर सम, पाखण्डिन के काज ।
रघुनन्दन सब नाश हैं, दो दिन का सब साज ॥३२॥

ईश्वर धर्म प्रचार को, ज्ञान भक्ति के हेत ।
रघुनन्दन जो दे रहे, सो अक्षय फल देत ॥३३॥
वैर भेद सब त्याग दे, क्षण भंगुर संसार ।
रघुनन्दन चलना सही, मिलकर समय गुज़ार ॥३४॥
हरि सुमिरण में मन लगा, कर कर पर उपकार ।
रघुनन्दन संसार का, झूठा भरम निवार ॥३५॥
निन्दा कपट हटाय दे, पुरुष धर्म मन धार ।
रघुनन्दन भव सिन्धु से, तरण चाह जो पार ॥३६॥
व्यसन भोग सब पाप हैं, क्या इन में भटकाय ।
मिथ्या सुख के कारणे, जीवन रहा गंवाय ॥३६॥
विजय वीरता बल वधे, मुक्ति प्रेम अरु ज्ञान ।
रघुनन्दन शुभ कर्म सो, और सभी अज्ञान ॥३८॥
पाखण्डिन के तम नशें, शुद्ध होंहि नर नार ।
रघुनन्दन मिल कर बसें, सो है धर्म प्रचार ॥३६॥
नर तन को पा कर सदा, सेवो पुरुष समाज ।
रघुनन्दन तिस कर तुमें, होगा मंगल साज ॥४०॥
शुभ भारत के राज्य में, सुख पावत नर नार ।
परमेश्वर के धर्म का, मिला सबे अधिकार ॥४१॥
इसमें सब का है भला, सेवो प्रेम रलाय ।
रघुनन्दन पिछला समय, देखो ध्यान लगाय ॥४२॥
एक पिता के पुत्र सम, कर प्रभु हमें रलाय ।
रघुनन्दन पाखण्ड के, सब तम दूर हटाय ॥४३॥

पुरुष धर्म सेवें सदा, तन धन प्रेम लगाय ।
रघुनन्दन पाखण्ड में, स्वपने ध्यान न जाय ॥४४॥

सत मारग से लो पिता, पाप ताप कर नाश ।
रघुनन्दन सत रूप का, करके ज्ञान प्रकाश ॥४५॥

नमः सर्वतस्ते विभो, नमः सर्व आधार ।
रघुनन्दन बहि रंतरा, त्वं प्रभु एक अपार ॥४६॥

श्री पुंधर्म प्रकाश को, जो सेवहि मन लाय ।
रघुनन्दन सुख सम्पदा, पावहिं बिना बुलाय ॥४७॥

वेद रस ग्रह चन्द्रमा, पूजो फागुण मास ।
श्री पुंधर्म सुभजन का, हमने किया प्रकाश ॥४८॥

प्रेम लगा कर पढ़ सदा, धारण कर चित लाय ।
पाप अविद्या तम नशें, ज्ञान भक्ति बल पाय ॥४९॥

पापी पाप प्रभाव से, भजन सुधा नहि पाय ।
रघुनन्दन वह पाप कर, व्यसनों में भटकाय ॥५०॥

निवेदन

हितं मिथः प्रकुर्यात् भवेत् सहृदाः सदा ।
अयंवोऽस्त्येव शं पन्था पश्यतैकः समः पुमान् ॥

पुं० अ० ५३ कि० २७

यह नित्य यज्ञ सर्व पुरुष जाती के जीवन पवित्र करने को और इसके द्वारा परम पुरुष परब्रह्म के पास ही पहुंच जाने के लिये श्री पुरुष धर्म भास्कर के ६४ वें अध्याय में जो वर्णन किया गया है, उसे भी वहां से लेकर इस अष्टम् प्रमोद के साथ ही शामिल कर देना उचित समझता हूं। परन्तु वहां बहुत विधि आदि का वर्णन आया है। पुस्तक बड़ी न हो जाये इस विचार से उन को छोड़ कर मुख्य यज्ञ किरणों को ही वहां से लेकर बिना विस्तार के भाषा टीका कर देता हूं। यह नित्य यज्ञ मैंने जिस पुस्तक से लिया है वह परब्रह्म परम पुरुष का ही कहा हुआ है। यह पुस्तक परम पुरुष सद्देव से ही महर्षियों को प्राप्त हुई है। इसी से इसका नाम पुरुष धर्म भास्कर है। यानि परम पुरुष के कहे हुए धर्म का सूर्य इसके ६१ अध्याय हैं। इन सब के अन्दर छन्दो बद्ध हज़ारों मंत्रों का नाम कर अंशु किरण कहे जाते हैं। जैसे सूर्य और सूर्य के किरण होते हैं। इस नित्य यज्ञ में संपूर्ण पुरुष पौरुषियों का समान अधिकार होता है। प्रातः काल वा संध्या समय वा हर समय जब चाहें

तब परमात्मा का नित्य यज्ञ प्रेम से कर सकते हो। वह प्रभु हमारे बाहिर भीतर सदा विद्यमान रहता है। अपने परिवार के सहित अपने घर ही में मिल कर या स्त्री पुरुष मन्दिर में जाकर नित्य यज्ञ किया करें, पुरुष मन्दिर नहीं होवे तो किसी पवित्र स्थान पर जाकर बड़े उत्साह से सैंकड़ों व हज़ारों एकत्रित होकर व हर त्योहारों में श्रद्धा से नित्य यज्ञ करना चाहिये। धनुषाकार पंक्तियें लगा कर उत्तर ध्रुव की तरफ मुख करके सब बैठें, और पुरुष धर्माचार्य आगे बैठें यज्ञ किरणों को आचार्य स्वर से पढ़ें, और सब मन में पढ़ें और यहां नमः शब्द आवे वहां पृथ्वी तक सब शिर झुका कर परब्रह्म को प्रणाम करें। यज्ञ समाप्त कर के परमात्मा के पुरुष धर्म का ज़ोर से सदुपदेश करें इस प्रकार नित्य यज्ञ करने से अविद्या से उत्पन्न हुए सब मत भेद पाखण्ड पाप नाश हो जाते हैं : परम संगठन पाकर एक होकर परब्रह्म के पास ही पहुँच जाते हैं। तिस से अपार बल पाकर सर्वत्र स्वतन्त्र स्वराज्य पालते हैं। यही पुरुष जीवन का परम लाभ है। और अन्त में परम धाम की प्राप्ति स्वयं ही हो जाती है: और तरफ जाने से तो दुःख ही दुःख आगे आते हैं। विशेष क्या कहें, महापुरुष स्वयं ही समझ लेंगे।



अथ श्री नित्य यज्ञः

अब आगे श्री पुरुष धर्म षडक्षर निष्काम महा किरण का प्रकाश दिखाया जाता है ।

वन्देवोऽयं विभो ॥ पु० अ० १४ कि० १७ ॥

ॐ है सत्य नाम जिस प्रभु का इसके स्मरण से परम पुरुष में सद्भाव पैदा होता है । हे सर्व व्यापी सुखस्वरूप पालन कर्ता प्रभो हे सदा अविनाशी नित्यनव देव तुम को मैं (बहुवचन आदर को है) अभिवादन स्तुति कर सेवता हूँ सर्वशक्तिमय पूर्ण रूप आप ही हैं आपका चिन्तन संसार के सर्व दुःखों से बचा कर परम पद का देने वाला होता है ॥ १७ ॥ परम पुरुष प्रभु का भजन करने को दूसरा सप्ताक्षर का निष्काम महा किरण ।

श्री रामवोऽजों नमः ॥ पु० अ० १४ कि० १८ ॥

अपार शक्तिशाली परब्रह्म परम पुरुष सर्वेश्वर सर्वव्यापी श्री राम जी ॐ है आपका पवित्र शुभ नाम आपके दिव्य स्वरूप में सद्भाव पैदा करने वाला है । हे अविनाशी नित्यनव सर्वत्र प्रकाशमान प्रभो ऐसे आपको मेरी नमस्कार होवे (बहुवचन आदरार्थ है) श्री राम नाम परमात्मा का अपार बल वीर्य शुद्ध अमृत से भरा हुआ है, इसके सेवन से सर्व पाखण्ड पाप अविद्यादि दोष व्यसनादि विकार सर्व बन्धनाऽशक्ति में नाश हो जाते हैं और परमानन्द का विकास पा कर संसार

के सर्व पाप दुःखों से मुक्त हो कर अविनाशी परम धाम को प्राप्त हो जाता है। इसी विषय की पुष्टि में यजुर्वेद के मन्त्र ने कहा है कि :—

न तस्य प्रतिमाऽअस्ति यस्यनाम महद्यशः।

॥ य० अ० ३२ म० ३॥

उस परब्रह्म परमात्मा के समान और कोई देव नहीं है वही एक नित्य नव सर्वत्र प्रकाश रहा है परन्तु पापात्मा मलीन चित्त दुर्भाग्य को कुछ नज़र नहीं आता है जो संसार के मोह जाल में अन्धा हो रहा है। आगे उस प्रभु के नाम का बड़ा भारी यश बताया गया है। इस विभु के राम नाम का यश इसी से विशेषकर बताया गया है कि महा पातकी भी इसका सुमिरण करने से सर्व पाप दुःखों से मुक्त हो कर परम पद पालते हैं। इस पर शंका होती है कि ऐसे प्रभाव वाला यह राम नाम ही है या और कोई नाम न होवे। आगे राम नाम को महर्षियों के शब्द शास्त्र से सिद्ध करके दिखाते हैं।

रमु। क्रीडायाम्। धातुयों से नाम सिद्ध होते हैं। उपदेशेऽजनुनासिकइत्॥ १।३।२॥ इस सूत्र से अनुनासिक उकार का लोप हो कर रम्, रहा तव। हलश्च॥ ३।३।१२१॥ हलन्ताद्धञ्स्याद्घापवादः। हलन्त धातु से परे घञ्होवे घा का अपवाद है। तव। लशक्वतद्धिते॥ १।३।८॥ इस सूत्र से कवर्ग के घ का लोप अ शेष रहा तव। रमः। अत उपधायाः॥ ७।२।११६॥ इस सूत्र से उपधा की वृद्धि हुई। उपधा किस को कहते हैं। तव अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा॥ १।१

६५ ।। अन्त्यादलः पूर्वोवर्ण उपधा संज्ञः स्यात् । तव म से पूर्व र के ह्रस्व की उपधा संज्ञा हो कर दीर्घ हुआ तव रामः। सिद्ध हुआ ।

रमन्ते योगिनोऽस्मिन्निति रामः

इस सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान् परिपूर्ण परम पुरुष परब्रह्म में योगी जन मुक्तात्मा महा पुरुष इस ऐसे प्रभु में रमण करते हैं, इसी से इस विभु का पवित्र मुख्य नाम राम है। इस प्रकार शब्द शास्त्रकर्ता महर्षियों ने राम नाम सिद्ध किया है । अतः श्री राम नाम सब से बड़ा शुद्ध पाखण्ड अविद्या पाप दुःखों को नाश करके परम धाम का देने वाला है और श्री राम में ही पंच भूत अनन्त ब्रह्माण्ड अनन्त ज्योतिगण काल चक्र अनन्त जीवगण परब्रह्म श्री राम में ही रम रहे हैं, श्री राम से ही सब की जीवन स्थिति सिद्ध हो रही है। श्री राम ही विश्व के बाहिर भीतर सर्वत्र प्रकाश रहे हैं और श्री राम से ही विश्व का जन्म स्थिति प्रलय हुआ करते हैं। अतः श्री राम राम जी को ऐसा जान कर श्रद्धा भक्ति प्रेम से मन में सब को धारण कर रखना चाहिये। अब आगे इस विषय पर विचार करना पड़ता है कि योगी कौन होते हैं, किन को योगी कहते हैं। इस समय हमारे भारत में तो गोरख मत पर चलने वाले कान फड़ा, मद्य मांस का सेवन करने वालों को ही योगी कहते हैं। क्या यही लोग योगी होते हैं या कोई और होते हैं? इस विषय को सिद्ध करने वाला पातञ्जल महर्षि का योग दर्शन प्रसिद्ध है, उसको देख लीजिये उसमें तो इस प्रकार कहा है कि

"योगश्चित्तवृत्ति निरोधः" चित्त की वृत्तियें जो पांच प्रकार के मार्गों से भटकती रहती हैं उनको रोक कर परब्रह्म में स्थापित करने का नाम योग है। इस योग के आठ अंग होते हैं। यथा—

यमनियमासन प्राणायाम प्रत्याहारधारना ध्यान समाधयोऽष्टावंगानि ॥ यो० ॥

इन सब का अर्थ लिखने से तो पुस्तक बहुत बढ़ जाती है। अतः प्रथमांग यम को ही दिखाते हैं।

अहिंसा सत्याऽस्तेयब्रह्मचर्याऽपरिग्रहा यमः ॥यो०॥

अहिंसा धर्म का सदा पालन करना, किसी को वृथा न सताना, सत्य में सदा मन की स्थापना, चोरी न करना, सब तरफ से इन्द्रियों का संयम, व्यसनों से रहित हो कर परब्रह्म के सत्य स्वरूप का विचार धारना, किसी का दान न लेना, ये पांच संयम का नाम यम है। इसी प्रकार जिसके आठों अंग पूर्ण रूप से सिद्ध होते हैं उसी का योग सिद्ध होता है। ऐसे योगी जन मुक्तात्मा योग सिद्धियों से पूर्ण हो कर परब्रह्म में एकी भाव से रमते हैं। इसी से उस परब्रह्म का नाम श्री राम है। इस प्रकार के योगाऽभ्यासी महात्मा जन योगीराज होते हैं और कोई पन्थ वेषधारी लोग योगी नहीं होते हैं।

अब आगे पुरुष धर्म का षडाक्षर बीज महा किरण का प्रभाव दिखाने वाला किरण प्रकाशित होता है।

पुंधर्म वीजमन्त्रोऽयं सर्वसिद्धि सुखप्रदः ।
अनेन पुरुषा योषा भजन्तु पुरुषं विभुम् ॥ १८

श्री पुरुष धर्म का बीज रूप यह षडक्षर महा मन्त्र है कैसा है कि सर्व प्रकार के सुख सिद्धियों का देने वाला है। अतः सब पुरुष पौरुषियें इस मन्त्र के द्वारा सर्वव्यापी सर्व शक्तिमान् परम पुरुष को प्रेम से भजा करें, सेवन किया करें ॥ १८ ॥

अब आगे सप्ताक्षर महा किरण का प्रभाव दिखाने वाला किरण प्रकाशित होता है।

अयं चैव तथाऽऽचार्या निष्कामः सर्व कामदः ।
भजन्त्विमं सदा भक्त्या प्राप्नुवन्ति परं विभुम् ॥ २०

और हे पुरुष धर्म का प्रकाश फैलाने वाले महाचार्य हो तिसी प्रकार यह सप्ताक्षर महा मन्त्र भी निष्काम सर्व काम मनोरथों का देने वाला है। इसको सब पुरुष पौरुषियें सदा श्रद्धा भक्ति से सेवन करें। इसके भजन से प्रेमी जन संसार के पाप दुःखों से मुक्त हो कर सर्वव्यापी परम पुरुष को ही प्राप्त हो जाते हैं ॥ २० ॥

अब आगे इन दोनों महा मन्त्रों को कौन पुरुष प्राप्त होते हैं, सो दिखाने वाली किरण प्रकाशित होती है।

इमौ मन्त्रौ महाचार्या महत्पुण्येन विन्दति ।
संसार पापदोषेभ्यो मुक्तो भूत्वाहि यात्यजम् ॥ २१

हे महाचार्य ! इन दोनों महा मन्त्रों को बड़े भाग्य से

मनुष्य पाता है, जब उसको बड़े पुण्य का उदय होता है तब वह परब्रह्म के भजन की इच्छा करके इन मन्त्रों को प्राप्त करके भजता है, तब वह पुरुष संसार के पाप दुःख दोषों से मुक्त हो कर अविनाशी धाम में प्रवेश करके वहां परम पुरुष नित्यदेव को ही सदा के लिये प्राप्त हो जाता है ॥ २१ ॥

और किरण का प्रकाश देखिये :—

यज्ञकरान्न जानन्ति येमानसे पठन्तु ते ।
यान्ति यज्ञ फलं सर्वं विभुं प्रिया भवन्ति च २२॥

बहुत से पुरुष ऐसे होते हैं जो सम्पूर्ण यज्ञ किरणों को नहीं कण्ठ किये होते हैं, वे पुरुष उन दोनों वीज मन्त्रों को याद कर लें और यज्ञ पंक्ति में शामिल हो कर एक दफा दोनों का मन में जाप किया करें तो सम्पूर्ण यज्ञ के पुण्य को प्राप्त हो जाते हैं, और वे परब्रह्म को प्रिय भी हो जाते हैं ॥ २२ ॥

अब आगे श्री पुरुष धर्म की गायत्री तथा चार और ये पांच किरणें श्री परब्रह्म के विनयरूप में प्रकाशित होती हैं पढ़िये।

पुरुषोऽहं विभोऽस्मि वो दयां कुरु नमश्च वः ।
परितोमेऽवमे पितः ॥ २३

हे विभो सर्वव्यापी परब्रह्म मैं आपका ही पुरुष हूँ मेरी आप को नमस्कार होवे और हे पिता मुझ पर दया प्रदान करो, मैं आप से विमुख हो कर अविद्याकृत पाखण्ड पापों में न पड़ जाऊं मेरी सब ओर से रक्षा करो ॥ २३ ॥

ईशेश देवेश समेश धातो-
नित्य प्रभो नोऽजविभो नमो वः
कृत्वा हि चास्मासु कृपां पिता नो-
ज्ञानं ददस्वोत् गृहाणयज्ञम् ।।२४।।

हे हमारे सब के स्वामी पालनकर्ता नित्यनव अविनाशी देव हे ईश्वरों के ईश्वर हे देवों के देव हे हमारे सर्व विश्व के अन्दर बाहिर शासन करने बाले प्रभो ! हम सब की तरफ से आप को नमस्कार होवे। हे सर्व व्यापी पालन कर्ता पर पिता हम सब पर दया करके अपनी प्राप्ती का परम ज्ञान प्रदान करो, और अपनी भक्ति दान दो और हम सव जो आप का निश्चय से विनय रूप नित्य यज्ञ सेवन कर रहे हैं। उस को गृहन स्वीकार करें ।।२४।।

त्वंनोऽग्रतश्चोत्तर दक्षिणाभ्यां-
पश्चाच्चतूर्ध्वंहि विभोऽस्यधो वा
त्वं नः सदासत्सहृदश्चनोऽसि
दत्तं नमोवश्च सदा प्रयामः ।।२५।।

हे परम पुरुष सर्व व्यापी आप ही हमारे आगे पीछे से और दहिने वायें तरफ से ऊपर नीचे से और अन्दर बाहिर सब तरफ से प्राप्त हो रहे हो और सब प्रकार के ज्ञान विचार बल बुद्धि पुरुषार्थ आप से हम सव सदा पा रहे हैं, और आप ही सदा हम सव को साथ देने वाले रक्षक प्रभु हैं, और हे

सर्व प्रकाशक परम देव आप का ही दिया हुआ सर्व भोग्य पदार्थ हम सब सदा पा रहे हैं, और आप से ही सब जीवों का जीवन सिद्ध हो रहा है। आप को सब तरफ से नमस्कार होवे ॥२५॥

पश्यसि सर्वतो देव शृणोषि परितो बिभो ।

वयं युष्मत्तु किं ब्रूमः स्वयं जानासिनः पिता ॥२६॥

हे देव सर्वत्र प्रकाशमान प्रभो ! आप इस अपार संसार को सब तरफ से सदा देख रहे हो, आप से कुछ छिपा नहीं है। और हे सर्व व्यापी परब्रह्म आप सब जीवों की चारों तरफ से सदा सुन रहे हो। हम सब आप से क्या कहें, हे परम पिता आप हमारी सब कुछ बातें जान रहे हो ॥२६॥

स्वयानः कृपया देव पवित्रं कुरु सर्वथा ।

वयं बालाः पितस्तेस्मः सदा नः सुपथा नय ॥२७॥

हे देव ! प्रकाशादि शुभ गुणों से युक्त हम सब पुरुषों को अपनी ही दया दृष्टि से सब तरफ सब अवस्थाओं में पवित्र कर दो, जो हम कभी मलिन न होवें। सदा आप का चिन्तन किया करें। हे पालन कर्ता परम पिता हम सब आप के ही बालक वालिका हैं। सदा हम सब को अपने पुरुष धर्म के अच्छे मार्ग से लो अर्थात् हम सब आप के पक्के पुरुष हो कर सर्व सम्मत से पुरुष धर्म में चला करें ॥२७॥

अब आगे प्राणायाम का महा किरण प्रकाशित होता है।

त्वमेकोऽजोऽतमोऽमूर्तस्तिष्ठसि बहिरन्तरा ।
वेशयते च नो धर्मे पितः पुरुष पाहिनः ॥२८॥

हे परम पुरुष परमात्मन् तुम ही एक अविनाशी परम देव हो। और कैसे हो अविद्यादि अन्धकार दोषों से रहित सदा प्रकाश रूप हो और इस सब अनन्त संसार के बाहिर भीतर सब तरफ से व्याप्त होकर सब रूप में सदा से स्थित हो रहे हो और सब प्रकार की मायावी मूर्तियों से रहित सदा निराकार और श्री पुरुष लोक में साकार अप्राकृत दिव्य स्वरूप से भी सदा विराज मान हो रहे हो और हे परम पुरुष पालन कर्ता परम पिता हम सब विशेष कर क्या कहें संसार के पंच क्लेशादि दुःखों से हमारी रक्षा करो। और हम सब को अपने नित्य पुरुष धर्म में प्रवेश करो जिस में हम सब चल कर आप का चिन्तन करते हुए सदा के लिए अविनाशी परम धाम पुरुष लोक प्राप्त हों ॥२८॥

अब आगे विनय रूप में बारह किरणों का प्रकाश होता है, पढ़िये प्रेम से ।

भूयात्प्रवृत्तिर्न विभा कदाऽपि
पाखण्ड पापेषुदुरर्थकेषु ।
वेषेषु मार्गेषु नचार्चधीस्या-
त्वेषां च देवेष्वपिमा तथा नः ॥२९॥

हे सब व्यापी अनन्त सर्व महा वीर्यों से संयुक्त परम पुरुष हमारी प्रवृत्ति बुरे अर्थ वाले पाखण्ड पापों में कभी भी न होवे

और नाना वेष धारियों में तथा गेर पन्थों में हमारी पूज्य बुद्धि न होवे और तिसी प्रकार उन लोगों के मिथ्या देवों में हमारी श्रद्धा प्रेम वाली बुद्धि न होवे ॥२६॥

मिथ्या व्ययः कर्मसुराननः स्या-
द्ध्यामहिदेव खलान्सुदण्डः ।
नित्यं वसाम सुखहार्द युक्ताः-
स्नेहस्य पात्रं ननु ते भवाम् ॥३०॥

हे देव सर्वत्र प्रकाशमान प्रभो हमारा धन व्यसनादि पाप कर्मों में खच न होवे सदा पुरुष धर्म के यज्ञों में ही खर्च किया करें । और दुराचारी राक्षस लोग जो भारत में अविद्यान्धकार पापों के फैलाने बाले होते हैं उन खलों को हम सब एक होकर उत्तम दण्ड देने में समर्थ होवें जिस कर वे लोग हमारे भारत से विनाश को प्राप्त होवें । और हम सब वैर घृणा भेदादि पापों को हटा हटा कर एक होकर सुखैश्वर्यादि से पूर्ण परस्पर में प्रेम युक्त होकर भारत में वसा करें । और हम सब आप के सच्चे प्रेम के पात्र होवें । और आप के पुरुष धर्म का पवित्र प्रकाश सर्वत्र फैलाते रहें ॥३०॥

अविद्या तिमिरं नष्ट्वा छातत्वं नः प्रभो मिथः ।
एकं पुरुषं धर्मस्य समतत्वं प्रयच्छ नः ॥३१॥

हे हमारे अन्दर और बाहिर शासन कर्ता प्रभो हमारे अविद्यादि तिमिरों को नाश करके और हमारी परस्पर की दुर्बलता को हटा कर अपने एक पुरुष धर्म का संमत हम सब

को प्रदान करो। जिस का हम सब सदा मिल कर सेवन किया करें ॥३१॥

वैरं दम्भं घृणां कुत्सां न कुर्वाम विभो मिथः।
कस्माद्भीनैंव कुर्वाम धर्मस्याऽवामते सदा ॥३२॥

हे सर्व व्यापी परम देव हम सब भारत वासी अब कभी भी भूल कर परस्पर में वैर निंदा घृणा दम्भादि पापों को न करें और किसी से कभी भी किसी प्रकार का भय न करें। सदा मिल कर आप के पुरुष धर्म की रक्षा किया करें ॥३२॥

भूतानां सर्व लोकाणां कर्ताधाता पितोऽसिनः।
यानि सर्वाणि पश्यामो भोक्तुं कृतानि नस्त्वया ॥३३॥

हे हमारे पालन कर्ता परम पिता पंच भूतों के वा भौतिक सर्व प्रकार के ब्रह्माण्डों के और देव मनुष्यादि सर्व प्राणियों के उत्पन्न पालन धारण कर्ता सब प्रकार सदा से आप ही हैं। और ये सव जहां तक ऊपर नीचे हम सब देख सुन रहे हैं। वे सब आप ने हमारे भोगने को ही रचे हैं। आप की ही दया का प्रभाव है ॥३३॥

मनस्तून्सर्वाणि पापानि दिनेनक्तं कृतानि च।
समांस्तानि क्षमस्वनस्त्वं दयालुः पिताऽसिनः ॥३४॥

हे परम पुरुष हमारे सव प्रकार के अपराध और सब प्रकार के पाप जो दिन रात में हम ने जान कर वा भूल में किये हों वे सव अपराधों को और पापों को क्षमा कर दो।

क्योंकि आप ही हमारे दया सागर परम पिता हो। बालकों पर पिता सदा ही दया करते हैं ॥३४॥

पुरुषाः स्मोवयं वो हि मतानुगाः सदा च वः ।
वीर्यं च विजयं दत्वा शिवं प्रयच्छ नः पितः ॥३५॥

हे भगवन्परम पुरुष हम सब आप के ही पुरुष हैं। और हम सब आप के ही पुरुष धर्म भास्कर के पवित्र मत के पीछे सदा चलने वाले हैं। हे पालन कर्ता परम पिता हम सब को एकता का पराक्रम संगठन और पाखण्डियों में विजय प्रदान करके आप की प्राप्ती रूप कल्याण प्रदान करो ॥६५॥

विश्वानि देव भूतानि भूयासुः शर्मदा हि नः ।
मंगलं सर्वतो भूयाज्जयो भूयाच्चनः सदा ॥३६॥

हे देव सर्वत्र प्रकाशमान प्रभो संपूर्ण भूत भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश, पांचों भूत और देव मनुष्यादि सर्व प्राण धारी तथा दिशा काल नत्रत्र वार तिथ्यादि सर्व ऊपर नीचे जो कुछ भी हैं वे हम सब पुरुषों को सदा सुख देने वाले होवें और सब तरफ से हम सब को मंगल होवे और सदा पाखण्डियों में हमारा ही विजय होती रहे ॥३६॥

न पश्यामकदाप्यत्र दुर्म्लेच्छा पापचारिणः ।
नाशं कुरुष्व देवेश तेषां नो भारताद्विभो ॥३७॥

हे प्रभो सदा पापों की ही इच्छा करने वाले तथा पापों में ही विचरने वाले महा पापियों को हम सब कभी भी यहां

अपने पवित्र भारत में न देखें, और हे देवों के देव ऐसे उन पापियों का हमारे भारत से नाश करो जिस कर इस पवित्र भूमि में हे विभो किसी किसम के उपद्रवादि पाप न होवें ॥३७॥

कुभाषा दुर्मतादीनि भूयासुर्भारते च मा ।
स्वराज्ये संस्कृतभाषा भूयासुः सद्गुणाश्च नः ॥३८॥

हे परमात्मन् बुरी भाषा और बुरे मतादि जो पाखण्ड पापों के फैलाने बाले होते हैं, देशी हों या विदेशी वे हमारे पवित्र भारत में न होवें। और भारत में पुरुषों का ही स्वतन्त्र स्वराज्य होवे, और संस्कृत देव वाणी पवित्र भाषा भारत में सदा प्रचलित रहे। और पुरुषों को सदा सद्गुणों का ही बर्ताव रहा करे ॥३८॥

पश्याम भद्रं शृणुयाम भद्रं
तिष्ठाम भद्रे च भवाम भद्रम्।
कुर्वाम भद्रं च रफाम भद्रे
विन्दाम चैकं पुरुषं सुधर्मम् ॥३९॥

हे परमात्मन् हम सब भारत वासी आप के पुरुष सदा मंगल को ही देखें। हमारे में कभी भी अमंगल न होवे। और हम सब सदा आप के ज्ञान विचार भक्ति नामों का स्मरणादि मंगल से भरे पवित्र शब्दों को ही सुना करें। और मंगल में ही हमारी स्थिति होवे और सब कल्याण के ही सदा पात्र हो कर भारत में बसा करें और हम सदा परस्पर में मंगल कार्यों को ही किया करें, तथा मंगल में ही हमारा गमन होवे और

आपके एक ही अविनाशी पवित्र पुरुष धर्म को प्राप्त होवें जो अविनाशी परम पद का देने वाला है। ३६।

त्वं देव नित्यं बलदः पिता नस्त्वं
नश्चलेहो धनदः सदाऽसि ।
त्वं ज्ञानदोनश्च सदाऽसि धाता
भूयान्नमोवः परितो वयन्नः ॥४०॥

हे सर्वत्र प्रकाशमान प्रभो ! आप ही हमारे पालनकर्ता परम पिता हो, और आप ही हम सब देव मनुष्यादि प्राणियों को सदा बल प्रदान करने वाले हो, और आप ही हम सब को धन देने वाले दाता हो, तथा आप ही सब प्राणियों को सदा भोजन प्रदान करते हो, सदा सब के सच्चे आप ही पोषण करने वाले धाता हो और आप ही हमारे अन्दर प्रकाशित रह कर सदा सर्व प्रकार के ज्ञान प्रदान कर रहे हो, आप ही हमारे सच्चे सद्गुरु हो हमारी चारों तरफ से आप को प्रणाम होवे और हमारी विनय रूप नित्य यज्ञ आपको समर्पण होवे। सो स्वीकार कीजिये ॥४०॥

पुरुषोऽहं विभोऽस्मि वो दयां कुरु नमश्चवः ।
परितोमेऽवमेपितः ॥ पुनर्गायत्री पाठ है ।

———

अथ ध्यानम्

तेजोमयस्त्वं विभुरव्ययश्च-
ज्ञानस्वरूपश्च सदाऽजनित्यौ ।
त्वं शुद्धमुक्तौ विजरा विमृत्यु-
र्धाता सदा सर्व पिता विमूर्तः ।।४१।।

हे देवों के देव ! आप सदा तेजस्वरूप तेज से भरे हुए हो आपके ही प्रकाश से यह सर्व संसार ऊपर नोचे प्रकाशित हो रहा है और अन्दर बाहिर सर्व संसार में व्याप्त हो रहे हो और आप सर्व समय में एक रस रहते हो कोई परिवर्तन नहीं होता इसी से आप अव्यय कहाते हो और सदा अविनाशी नित्य ज्ञानस्वरूप हो, आप सदा स्वभाव से ही शुद्ध मुक्त और वृद्धादि अवस्था दोषों से रहित मृत्यु से परे सर्व विश्व के धारण पोषण करने वाले धाता तथा रक्षक जन्म दाता परम पिता हो और मायावी मूर्तियों से रहित अप्राकृत दिव्य मूर्ति से सदा विराजमान रहते हो ।। ४१ ।।

त्वं पूर्णकामो गुणईशनेता
त्वं सर्व वित्सर्व बलादियुक्तः ।
त्वं पालकः सर्व भवन्ति त्वत्तो
जीवन्ति तिष्ठन्ति च विष्टपाणि ।।४२।।

हे परमात्मन्देवों के देव ! आप ही सदा पूर्ण काम हो और प्रकृति सत्व, रज, तम इनके स्वामी आप ही हैं तथा आपकी ही सेवा में ये सब विश्व में व्याप्त हो कर काम कर रहे हैं और आप ही सर्व संसार को सदा चलाने वाले सच्चे नेता हो और आप ही सर्व में व्याप्त हो कर विश्व के अन्दर बाहिर की सब कुछ जान रहे हो और आप ही नित्य बल अपार पराक्रम सर्व सिद्धियों से परिपूर्ण व सर्व के स्वामी प्रसिद्ध हो। आप ही सब के सच्चे पालक सदा से हो और जो कुछ हो रहा है सब आप से ही हो रहा है और अनन्त लोक भुवन आप से ही हो हो कर आपके आकाश शरीर में ही स्थापित हो रहे हैं और देव मनुष्यादि सर्व प्राणी आप से ही पुष्टि पा कर जीवित रह रहे हैं ॥ ४२ ॥

त्वं सर्वकर्ता बहिरन्तरा च
हर्ता सदा तिष्ठसि सर्वसाक्षी ।
त्वं काल कालः परतः परस्त्वं
त्वं देवदेवं शिरसा नमामः ॥४३॥

हे प्रभो ! आप ही सर्व भुवनों के तथा सर्व प्राणियों के बाहिर भीतर सर्व संसार में व्याप्त रह कर सदा स्थित रहे हो अतः सदा से सब के आप ही सच्चे साक्षी हो और आप से ही बुद्धि बल स्मृति ज्ञानादि सर्व प्राणियों को सदा प्राप्त हो रहे हैं। अतः सर्व कार्यों के कर्ता आप ही हैं। आप से ही सर्व प्रकार के कार्यादि व्यवहार सिद्ध हो रहे हैं और आप ही सब के हरण करने वाले हर्ता काला के भी महा कालों सबको संहार

विनाश करने वाले हो और आप ही पर से परे सदा सर्वत्र प्रकाशित हो रहे हो। ऐसे देवों के देव आप को हम सब आपके सेवक पुरुष भूमि पर शिर धर धर कर शिर से मन से प्रणाम करते हैं।

भूतानि सर्वाणि दधासि त्वं च
त्वां तानि जानन्ति नविष्टपाणि।
तवास्ति सर्वेषु सदा निवासः
त्वां नास्ति सीमः क्वचते भजामः ॥ ४४

हे प्रभो ! आप ही सर्व विश्व में ओतप्रोत हो कर सर्व भूतों को धारण कर रहे हो तथा सर्व भुवनों को अधराकाश में थाम रहे हो और आपका निवास भी सर्व में सदा से हो रहा है परन्तु आपको वे सब आप की माया वश जानते नहीं हैं, कि हम सब किसके आसरे बैठे हुये हैं, और हे विभो आप अपार सीमा रहित किसी प्रकार की सीमा आप की कहीं नहीं है। हे देवों के देव ! हम सब आपके सेवक पुरुष ऐसे आपको अपार नित्य सुख सिद्धियों से सदा पूर्ण सदा स्वतन्त्र अविनाशी जान कर सदा प्रेम से सेवते हैं ॥ ४४ ॥

अब ध्यान से परे यज्ञ समाप्त होने पर गायत्री छन्द में शान्ति विनय का किरण प्रकाशित होता है।

शमथः शमथः शमः शमथः परितश्च नः। भूयाद्धि-
परमेश्वर ॥ ४५

अब हे परब्रह्म परमेश्वर ! हमारे लिये चारों तरफ से आप के प्रेमानन्द रूपी शान्ति शान्ति शान्ति होवे शान्ति होवे ॥ ४५ ॥

अब आगे हर समय परब्रह्म के नाम सुमिरण करने को एकादश नाम गायत्री महा किरण प्रकाशित होती है।

श्री रामेन्द्रसमेश नः श्रीशाऽजोंवो विभो नमः।
नित्यानन्त हरे स्वभु ॥ ४६

इस श्री एकादश नाम गायत्री महा किरण में सम्बोधन एकादश नामों से परब्रह्म का सुमिरण किया जाता है। जैसे श्री राम हे इन्द्र ! हे हमारे सर्व के शासन कर्ता प्रभो ! हे सर्व शोभा लक्ष्मी के स्वामिन् ! हे अविनाशी देव ! हे सर्व तारक ओंकार नाम अव्यय ! हे सर्व व्यापी ! हे नित्य देव ! हे अनन्त ! हे हरे ! हे स्वभु ! आपको हमारी प्रेम प्रणाम स्वीकृत होवे ।४६।

अब आगे इस नाम गायत्री महा किरण की महिमा दिखाने वाली दो किरणें प्रकाशित होती हैं, पढ़िये ।

निष्कामोऽयं महामन्त्रो गायत्र्या कथितो मया।
यज्ञान्तेवा सदा मर्त्या भक्त्येमं प्रपठन्तु हि ॥ ४७
अनेन सर्वपापानि नाशं भूत्वा महर्षय ।
भक्तिं मुक्तिं च विन्दन्ति भवन्ति च महाबलाः ॥ ४८

यह नाम गायत्री महा किरण परमात्मा ने गायत्री छन्द करके ही स्वयं प्रकाशित की है यह निष्काम है इसी से इसका

जाप बड़ा पवित्र है इसका उच्चारण यज्ञ के अन्त में व सदा सब समय पुरुषों को प्रेम भक्त्ति से इसको पढ़ना चाहिये ।।४७।

हे महर्षियो ! इस नाम गायत्री महा किरण से परम पुरुष को सेवने वाले पुरुषों के सर्व प्रकार के पाप अमंगल मैल नाश हो करके परमात्मा की परम भक्ति को प्राप्त होते हैं, और वे पुरुष सब से महा बलवान हो जाते हैं तथा अन्त में सर्व बन्धनों से मुक्त होते हैं और वे परम पद को पा लेते हैं ॥ ४८ ॥

अब आगे तेरह नामों का अनुष्टुपछन्द में सम्बोधन महा किरण प्रकाशित होती है ।

धातोऽजों नः पितो देव पुरुष पुरुषेश्वर ।
परमेश्वर देवेश विश्वेशाऽऽत्मन्विभो ध्रुव ॥ ४९

हे हमारे पालनकर्ता धाता ! हे अविनाशी ! हे ओं ! हे हमारे जन्मदाता, रक्षक पिता ! हे सर्वत्र प्रकाशमान देव ! हे पुरुषों के ईश्वर ! हे सर्व से परे परमेश्वर ! हे देवों के देव ! हे विश्वेश ! हे आत्मन् ! हे सर्व व्यापी शासनकर्ता विभो ! हे सदा स्थिर रहने वाले नित्य देव ॥ ४९ ॥

इमं मन्त्रं महाचार्याः प्रातः पठन्तु पूरुषाः ।
नश्यन्ति सर्व पापानि पुरुषाऽमा प्रयन्ति हि ॥ ५०

हे पुरुष धर्म महाचार्य्यो इस तेरह नामों वाले महा मन्त्र किरण को सर्व पुरुष पौरुषियें प्रात समय प्रेम से पढ़ा करें । इन तेरह नामों के द्वारा परम पुरुष का चिन्तन करने से वे पुरुष पौरुषियें श्री परम पुरुष के पास ही पहुंच जाते हैं, और सर्व

विघ्न नाश हो कर उनको सब समय मंगल में गुज़रता है ।५०।

अब आगे उपदेश रूप चार किरणें और प्रकाशित होती हैं।

मेलयति विभोनित्यं नित्ययज्ञः सदा नरान् ।
नाश कृत्वा च पापानि दिव्योमेऽयं महर्षय ।। ५१

हे महर्षि हो यह मेरे परुष धर्म का दिव्य नित्य यज्ञ सेवन करने से पुरुष पौरुषियों के सर्व प्रकार के पाप दोष नाश करके नित्य नव सर्वव्यापी सद्देव परम पुरुष से मेल कराता है और उनके मन बुद्धि में वह प्रभु प्रकाशित हो जाता है तिस कर वे सब सदा परम शान्ति को प्राप्त हो जाते हैं ॥ ५१ ॥

महोत्साहेण भक्त्या च कुर्युर्मे पुरुषाः सदा ।
पौरुष्योऽपितथाऽऽचार्याः शिक्षाचास्य सदा भवेत् ॥५२

इस नित्य यज्ञ को मेरे पुरुष बड़े उत्साह से और अनन्य भक्ति से सब मिल कर सदा किया करें और पुरुष धर्म के महाचार्य हो, तिसी प्रकार सब पौरुषियें मिल कर प्रेम से सादर सदा किया करें और इस नित्य यज्ञ की शिक्षा सदा सब बाल बालिकाओं को मिला करे, जिससे सब सुशिक्षित हो कर नित्य यज्ञ सदा किया करें ॥ ५२ ॥

नित्ययज्ञो गृहेयस्य भक्त्यादिभिर्भवेच्चन ।
तच्चाण्डाल गृहं वित्त महानीचा भवन्ति ते ॥ ५३

जिन लोगों ने परमात्मा का नित्य यज्ञ न सीखा हो और न जिसके घर में कभी श्रद्धा भक्ति से किया जाता हो वह घर

चाण्डालों का जानना चाहिये वे लोग स्त्री पुरुष महा नीच होते हैं ॥ ५३ ॥

पुरुष धर्महीना ये नित्य यज्ञं भजन्ति न ।
महाऽततायिना शूद्रा भवन्ति ते महर्षयः ॥ ५४

ये लोग ऐसे दुष्टात्मा हैं कि परमात्मा नित्य देव के पैदा किये हुये पदार्थों को तो वे लोग नास्तिक सर्व तरफ से सदा खाते रहते हैं और उसी प्रभु की सत्ता से उनका जीवन सिद्ध होता है। परन्तु वे परमात्मा के पुरुष धर्म से विमुख विहीन रहे हैं और परम पुरुष विभु से मेल करा देने वाले प्रभु के नित्य यज्ञ को भी नहीं सेवते हैं। हे महर्षियो वे लोग भारत में अविद्यादि पाप पाखण्ड फैलाने वाले मनुष्य हीरा जन्म की हत्या करने वाले महा आततायी महा पापी शूद्र होते हैं। भारतीय महा पुरुषों को उनका एक पल भी संग नहीं करना चाहिये, उनसे सदा घृणा करना ही अच्छा है। उनकी गति का हाल यजुर्वेद के ४०मे अध्याय में कहा है, सो सुनिये।

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसांऽऽवृताः ।
तौंस्ते प्रेत्याऽभिगच्छन्ति येके चात्महनो जनाः ॥

यजुः० । अ० ४० । म० ३ ।

(असुर्याः) असुरों के (नाम) जो प्रसिद्ध होते हैं (लोकाः) नाना प्रकार के नरक रूप भयानक नाना प्रकार की दुष्ट योनियों से भरे हुये (ते) सब लोक (अन्धेन तमसा) अज्ञानादि अन्धकारों से (आवृताः) दबे हुये रहते हैं वहां सूर्य का प्रकाश भी

कभी नहीं पहुंचता (येकेच) जो कोई भी (आत्महनः) अपनी व पर आत्माओं के हनन करने वाले आत्महत्यारे महा पापी नास्तिक मानव शरीर को पा कर ईश्वर के रचे सर्व पदार्थों को सदा पा रहे हैं, परन्तु जिन्हों में न ईश्वर भक्ति न देश भक्ति न धर्म सेवा, ऐसे मनुष्य आत्म हत्यारे ही होते हैं (ते) वे सब सब को सताने वाले (जनाः) दुष्ट मनुष्य (प्रेत्य) मर कर (तान्) उन्हीं आसुरी भाव भयानक लोगों को (अभिगच्छन्ति) दुष्ट योनियों को बार बार पा पा कर प्राप्त होते रहते हैं ॥ ३ ॥

सरलार्थ—हे पुरुष हो वे लोक जो सदा दुष्ट योनियों के असुर राक्षसों से भरे हुये रहते हैं। बुरे दुखदायी नाम वाले आसुरी लोक कहाते हैं, वहां अन्नादि शुभ पदार्थ कभी भी प्राप्त नहीं होते हैं वें परस्पर को ही सदा खाते रहते हैं और भयानक अविद्यादि अन्धकारों से ही सदा दबे हुये रहते हैं और वहां कभी सूर्य का प्रकाश भी दाखिल नहीं होता है, वहां उन लोकों में मर कर वे जीव प्रवेश करते हैं, क्योंकि यह आत्महत्यारे होते हैं। आत्महत्यारे कौन होते हैं जिन्हों ने ईश्वर दया से इस पुण्य भूमि पर मानव जन्म पा कर श्री भारतीय महर्षियों के रचे हुये सद्विद्याओं से भरे हुये उपनिषद् दर्शनादि सत्य शास्त्रों को नहीं पढ़ा है, न सुना है, न परमात्मा का सुमिरण किया है, न विचार द्वारा उस प्रभु को समझ में लिया न जाना, न उस परम देव की भक्ति गंगा में कभी नहाया, सदा उस विभु के रचे हुए सब पदार्थों को खा खा कर ले ले कर सुख पा रहे हैं परन्तु उस नव नित्य देव का नाम तक नहीं लेते हैं। ऐसे नास्तिक मूढ़ ये सदा में ही जीवन

लगाये रखते हैं, वे सब आत्महत्यारे ही होते हैं। व्यसन किसे कहते हैं ? व्यसन वे होते हैं कि जिनका परिणाम फल अज्ञान पैदा करके सदा दुःख स्वरूप ही होता है। जैसे गांजाः सूटा तम्बाकू सिगरेट, शराब जुआ, ताश, अफीम आदि के सब महा पाप दुःख रूप ही होते हैं, तथा अपने खाने के स्वाद को गरीब पशु पक्षियों की हत्या कर कर के उनके शरीरों को खाते रहते हैं, ये सब महा पापी आत्महत्यारे होते हैं। ये ही सब उन भयानक आसुरि लोकों में बार बार जन्म पा कर घोर दुःखों को सदा पाते रहते हैं। अतः पुरुषों को चाहिये कि वे व्यसनादि पापों से अपने आपको बचाया करें। यह पुरुष जन्म बार बार नहीं मिलता, ईश्वर की ही दया से मिला है। इस हीरा जन्म को व्यसनादि पापों में वृथा नहीं गंवाना चाहिये।

मुक्ति के दरवाजे पर आ पहुँचे हो अब सदा पुरुष धर्म भास्कर उपनिषदों, गीतादर्शनादि सत्य शास्त्रों को पढ़ा सुना करो, और विद्वान पुरुष धर्म के महात्माओं के पास जा कर सत्संग किया करो और दोनों समय सदा नित्य यज्ञ किया करो। जो परमात्मा से मेल कराता है। परम पुरुष के भजन से ही अविनाशी परमानन्द परम पद को प्राप्त होते हैं। पुरुष जन्म का यही परम लाभ है और सर्व संसार तो मृग तृष्णा के समान दुःख रूप ही है। विदेशी भाषा मतों से मन को हटा लो। यदि यहां से गिर जाओगे तो बुरी से बुरी दुःख रूप अज्ञान से

भरी पाप कुयोनियों में भटक भटक कर सदा घोर दुःखों को ही प्राप्त होते रहोगे। अब आगे किरण पढ़िये—

भजन्ति येच यज्ञादीन्पुंधर्मे मेरताः सदा ।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सदा शुद्धा भवन्ति च ॥ ५५

हे आचार्य ! मेरे पुरुष ऐसे धार्मिक होते हैं कि ये नित्य यज्ञादि सम्पूर्ण यज्ञों को धन, बल, बुद्धि लगा कर प्रेम श्रद्धा से सेवते हैं, प्रचार करते हैं और मेरे पुरुष धर्म में सदा प्रेमवद्ध रहते हैं, वे ही महा पुरुष मुझ को प्राप्त होते हैं और वे ही सदा सर्व पापों से मुक्त हो कर देवताओं के समान सदा शुद्ध रहते हैं ॥ ५५ ॥

परमात्मा से मिलने का यह नित्य यज्ञ ही सुगम उपाय है। अतः सर्व भारतवासियों को सदा चाहिये कि दोनों समय इस नित्य यज्ञ के द्वारा परब्रह्म का सेवन किया करें । इसी से सर्व प्रकार के पाप दुःख नाश हो जाते हैं। इसकी सरल छोटी सी भाषा भी मैंने कर दी है। आशा है आप सब इसको पढ़ पढ़ कर अमल में लायेंगे।

आप सब का हितकांक्षी
रघुनन्दनदास।

———





मिलने का पता :—

राजौरी पुल के पास,
पुरुष मन्दिर, ज़िला पुन्छ ।

यह पुस्तक अमर आर्ट प्रेस, मोती बाज़ार जम्मू में छपी ।

मूल्य ।)